वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

नवम्बर - 2018

* परोपकार ही जीवन है
* इन सचाईयों को मत भूलो
* भविष्य में मनुष्य मात्र का धर्म क्या होगा?
* ग्रह प्रवेश
* एक साधन
* श्राद्ध की सभा
* कल्याण सत्संग

भगवान देवात्मा के फरमान

प्रचारकों की हालत को दूर करने के लिए भगवान देवात्मा ने इन सत्यों को बार-बार उपस्थित जनों के दिलों में नक्श करने का यत्न किया कि

1) किसी प्रकार का सुख मनुष्य का लक्ष्य नहीं है। चाहे यह सुख धन सम्पति विषयक अनुराग को लेकर हो, चाहे सत्तान अनुराग को लेकर, चाहे स्वाददार वस्तुओं के खाने पीने को लेकर, चाहे काम भाव की तृप्ति को लेकर और चाहे किसी और प्रकार के अनुराग को लेकर हो, किसी भी सुख का अनुरागी बनने से प्रत्येक मनुष्य का आत्मा पतित होता है। इस पतन से उसके आत्मा में अन्धकार की उत्पति और वृद्धि होती है, और उसका यह अन्धकार उसे अपने आत्मा और अपने आत्मिक जीवन विषयक नाना सत्यों के देखने के अयोग्य बनाता है। इस पतन से उसमें उल्टी दृष्टि पैदा होती है, और वह अपनी इस उल्टी दृष्टि के कारण नाना सम्बन्धों में सत्य को असत्य और असत्य को सत्य, शुभ को अशुभ और अशुभ को शुभ के रूप में देखता है। उसके भीतर विविध प्रकार की नीच घृणाएं पैदा होती हैं, जो कि आत्मिक जीवन के लिए ज़हरे कातिल का काम करती हैं, और उन सब से उसके भीतर विविध प्रकार की मिथ्या, और विविध प्रकार के दुराचारों की ओर जाने के धक्के लगते हैं, और वह कई तरह की मिथ्या और कई तरह की और नीच गतियों को ग्रहण करता है। इन्हीं कारणों से मनुष्य जगत में इस कदर विविध प्रकार का झूठ और दुराचार आदि फैला हुआ है, कि जिसका ब्यान नहीं हो सकता।

2) किसी मनुष्य के हृदय में यदि विशुद्ध परोपकार का भाव पैदा हो और वह यथेष्ठ गहराई में वर्तमान हो, और यह इस भाव से परिचालित होकर बिना किसी से कुछ रुपया पैसा, तारीफ, इज्ज़त, मान और पद आदि का लालसी होने के केवल भलाई करने के निमित अपना सब कुछ अर्पण कर सके, और किसी से अपनी ओर से अपने लिए कुछ न चाहे, और परिवार के लोगों के लिए भी किसी से कुछ न मांगे और नेचर के विकासकारी नियम पर अटल विश्वास रखकर, उस नियम के अनुसार जिस देवात्मा का प्रकाश हुआ है, उनके देव रूप के साथ सच्चा योग करके अपना काम किए जाए जब नेचर की गुप्त विधि के अनुसार न केवल उसकी, या यदि उस का कोई परिवार हो, तो उस परिवार की पालना आदि के आवश्यक समान अपने आप पैदा हो जाएंगे, बल्कि जिस शुभ काम में वह लगा हुआ होगा, उस की उन्नति के लिए भी समय के साथ-साथ कई प्रकार के और आवश्यक सामान और अनुकूल हालात भी पैदा होते जाएंगे, कि जिस की पूर्णतः सच्ची मिसालें देव समाज के इतिहास में मौजूद हैं।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 5
नवम्बर – 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परोपकार ही जीवन है

मनुष्य का नीच जीवन अन्धेरा पैदा करता है। इसलिए आम हृदय अन्धेरे में ग्रस्त ही होते हैं। इस हृदय के अन्धकार के कारण मनुष्य, जीवन की उच्च, कीमती और महान सचाईयों को देख नहीं सकता। जैसे कौओं को हंस की बोली समझ नहीं आती, इसी प्रकार मनुष्य को महान मनुष्यों की बताई बातें वा सचाईयां समझ नहीं आतीं। जब मनुष्यों की बातें ही समझ नहीं आतीं तो देवात्मा की बताई हुई उच्च कोटि की सचाईयां जल्दी उसके हृदय में कैसे उतर सकती हैं।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" यह एक महान जीवन तत्व है। यह एक बहूमूल्य सचाई है। यह मनुष्य के हृदय में उतरनी कठिन है, इसलिए मनुष्य इससे कोई लाभ नहीं उठाता या बहुत नाममात्र ही लाभ उठाता है।

"परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" यह शब्द परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की याद में "कर्मचारी निवास" के उदघाटन के समय फरमाए थे। उन्होंने कुछ इस तरह फरमाया था कि "ग़ाफिल मत रह" नामक लेख पढ़कर श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के सामने यह आया था कि मैं कहां पड़ा हुआ हूं। जो चीज़ें मेरे साथ नहीं जा सकतीं, वह मेरी कैसे हुई। मनुष्य की हस्ती में आत्मा ही सार वस्तु है। उनको देवात्मा की रोशनी में यह सचाई नज़र आई। उनके सामने यह हकीकत खुली कि दुनियां के सब सामान असार हैं। श्रद्धेय श्रीमान जी की यह विशेषता थी कि उनके भीतर रुहानी रोशनी घुस गई जो आत्मा के तत्व दिखा सकती है। वह रुड़की कालिज से आकर पूजनीय भगवान को लहौर में मिले, वहां आकर उनके भीतर देव ज्योति के भिन्न देव तेज भी पहुंचा, तब उन्हें पता लगा कि "परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है" श्रीमान देवत्व सिंह जी को मालूम हुआ कि ज़िन्दगी परोपकार से ही बनती है। उनके भीतर हलचल पैदा हुई। आत्म हित की जब इच्छा जागी, तो उनकी ज़िन्दगी में परोपकार का काम शुरू हुआ। यह आला ज़िन्दगी का आगाज़ था।

यह सचाई एक महान सचाई है कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है, परन्तु मनुष्य को यह सचाई सारी उमर नज़र नहीं आती। यह सचाई देवात्मा की रोशनी में श्रद्धेय देवत्व सिंह जी को नज़र आई और सदा के लिए उनके जीवन में उतर गई। इस सचाई को देखने से श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का जीवन मार्ग उन करोड़ों अरबों मनुष्यों के जीवन मार्ग से बिल्कुल अलग वा निराला हो गया, जिनको उक्त सचाई बिल्कुल भी नज़र नहीं आई थी।

इस सचाई को गहराई से अनुभव करने के कारण श्रीमान जी के लिए इस संसार के सुख स्वाद और पदार्थ और सम्बन्धी फीके पड़ गए और वह पक्के इरादे से विशुद्ध परोपकार की राह पर पड़ गए, फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

आम मनुष्य इस धरती पर जन्म लेकर जब से होश सम्भालता है, तो उसको सुखदायक पदार्थ वा सम्बन्धी मिलते हैं, वह स्वभाविक ही बहुत अच्छे और प्यारे लगते हैं, और वह उनके साथ बन्धता जाता है, और अपने नीच सुखों की तृप्ति में लीन हो जाता है। साधारणत: मनुष्यों के जीवन का लक्ष्य वा मूल मन्त्र यह बन जाता है, (Eat drink & be Merry) खाओ, पीओ और मौज बहार करो। अधिक से अधिक सुख स्वाद देने वाले सम्बन्धी वा पदार्थ इकठ्ठे करो। यही जीवन है। ऐसे मनुष्य दुनिया के पदार्थो के कीड़े बनकर सारी उमर जीवन की बहूमूल्य सचाई को देख नहीं सकते कि परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है। इसलिए उससे कोई लाभ नहीं उठा सकते। जितना भी मनुष्य दुनिया का कीड़ा बनता जाता है, वह उक्त सचाई से दूर होता जाता है।

देव समाज के सेवक, सेवकाओं को तो क्या, कर्मचारी होने पर भी यह बहूमूल्य सचाई नज़र नहीं आती। वह इस सचाई की रोशनी में जीना तक आरम्भ नहीं करते, बल्कि हृदय के अन्धेरे के कारण, सुख स्वादों की बहुत ही ज़ोरदार चाट के सदका अपने सुख स्वादों और उनके सामानों के साथ बदमस्त होकर अपने ऐसे जीवन को ही ठीक और रोशनी भरा देखकर ग़ल्तफहमी में सारी सारी उमर गुज़ार देते हैं।

आम इन्सानी बच्चे स्वाददार खानों के दीवाने, नित बदलते फैशनों और पोशाकों वा दिखावे के दीवाने, अच्छी और बड़ी कारों, कोठियों के दीवाने, फिलमों, एक्टरों, होटलों, कलबों पार्टियों, डिस्को डांसों के दीवाने बने रहते हैं, इसी को वह अपनी शानदार ज़िन्दगी देखते और महसूस करते हैं। ऐसी दिवानगी के दीवाने कभी भी इस बहूमूल्य जीवन की सचाई को नहीं देख सकते, उससे लाभ उठाना तो दूर की बात। उनके हृदय में अन्धकार बढ़ता जाता है, ज्यों ज्यों इन सुखों की चाट बढ़ती जाती है। उक्त पदार्थो की दिवानगी मनुष्य के पास कोई समय ही नहीं रहने देती, जिसमें मनुष्य कोई और बढ़िया सोच रख सके। उनको अपने स्वयं के दिखावे से ही फुरसत नहीं।

एक वा दूसरे व्यसन, नशे, मांसाहार, शिकार, जुए, लिंग तृप्ति के जान लेवा इश्क मनुष्य को अन्धा बनाए रखते हैं, उसको कोई उच्च सोच आने ही नहीं देते। परोपकार के बिना ज़िन्दगी मौत है,किन पागलों की बोली है, वह समझ नहीं सकते।

धन, धरती और पदार्थ भी मनुष्य प्रकृति के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। सारा संसार इस मीठी झलक पर मोहित है। कीड़ों की तरह अरबों मनुष्य इनके परिणाम देखे बिना इनकी प्राप्ति पर लट्टू हुए रहते हैं। धन, धरती वा सुख ही लक्ष्य बन जाता है। यह समझ आना असम्भव सा हो जाता है कि इससे ऊंचा भी कोई काम हो सकता है। उनके लिए धन की प्राप्ति नई जान संचार कर देती है। क्योंकि इसी में उन्हें तृप्ति मिलती है। धन का वियोग एक एक जन के लिए घातक हो जाता है। परोपकार पागलों का काम दिखाई देता है।

मान, इज्ज़त, मर्तबा, पद, पोज़ीशन और प्रभुत्व आदि भी मनुष्य प्रकृति को बहुत आकर्षित करते हैं। राजनैतिक सर्कल में तो यह दिवानगी की हद तक होते हैं। यह सारे आकर्षण मनुष्य को अन्धकार की ओर ले जाते हैं, जिससे बहुत सी बहुमूल्य

सचाईयां देखने की क्षमता मारी जाती है।

परोपकार के बिना जीवन मौत है, यह सचाई उन लोगों को ही कुछ दिखाई दे सकती है जिनको ज़िन्दगी क्षण भंगुर दिखाई दे, जिनको उमर दौड़ती वा मौत की ओर जाती दिखाई दे। जिनको मरना याद ही नहीं रहता, जो संसारिक सुखों, पोशाकों, जेवरों, कारों, कोठियों वा स्वाददार खानों आदि पर परवानों की तरह गिरते हैं और उन्हें पता ही नहीं लगता कि कब अन्त समय आ दबोचता है, वह यह सचाई नहीं जान सकते।

भगवान देवात्मा ने एक बार फरमाया था, "हम नेचर के अंश है, हमारे पास जो कुछ भी है, वह वास्तव में नेचर की ओर से बतौर अमानत है यह हकीकत यदि सामने खुल जाए तो यह सत्य तुम्हें दिखाई देना चाहिए कि यदि यह हैं, तो उसके सम्बन्ध में देवात्मा जो रोशनी रखते हैं, वह इस विषय में क्या शिक्षा देते हैं? वह यह है कि मनुष्य को उन सब शक्तियों से ऊपर होना चाहिए कि जो अमानत में ख़्यानत करने के लिए मजबूर करती हैं। और दूसरी ओर अपने धन को नेचर के विकासकारी नियम का साथ देने के लिए इस प्रकार काम में लाना चाहिए: -

1. अपने आश्रित जनों की रक्षा और उन्नति के लिए
2. अपने सम्बन्धों में जहां हानिकारक बने हैं, उस हानि का परिशोध करने के लिए
3. जिस जगत से हमने हित पाया है या पा रहे हैं या हित पाने की उमीद रखते हैं, उन हितकर्ताओं की सेवा के लिए
4. इस नेचर के भीतर जो अस्तित्व हैं, जो हमारे उपकारी भी नहीं, उनकी बेहतरी या उनके उपकार के लिए, जिस में सब आ जाते हैं।

हमें इसी विधि से अपने धन वा जायदाद को खर्च करना चाहिए। अब इस सम्बन्धी ख़्यानत कब होती है, जब मनुष्य हित परिशोध वा हानि परिशोध के भाव से कुछ करना नहीं चाहता। ऐसे अमल सब चोरी, डाका और अपहरण में शामिल हैं, जिससे आत्मा नीच गति परायण होकर ख़त्म हो जाता है, हमारे अपने पास जो कुछ है, हमें इसी प्रकार खर्च करना चाहिए।

गुरू महाराज बार बार यह सचाई दिलों में उतारने की कोशिश करते थे कि जब तक मनुष्य अपने से निकल कर दूसरों के लिए सेवाकारी नहीं होता, तब तक धर्म जीवन का आरम्भ नहीं होता।

पर सेवा के बिना मनुष्य एक मुर्दा लाश की तरह रह जाता है, केवल इतना भर है कि उसकी सांसें चलती हैं। परोपकार के बिना मनुष्य पशु ही रह जाता है। पशु भी अपने लिए मारा मारा फिरता है, गोबर का कीट भी अपना पेट तो भरता है।

"बिन सेवा धरिग हाथ पैर" सेवा और सच्चा परोपकार ही धर्म जीवन का रहस्य है।

मिस्तरी वधावा राम जी (दाता जी) मज़दूरी करते, उसमें से भी सेवा के लिए समय निकालते और लोगों से मुफ्त सेवा की भीख़ मांगते।

श्रीमती जमना बाई जी धर्म पत्नी श्रीमान सेठ राधा कृष्ण जी बुढ़ापे में प्रत्येक वर्ष संगत में आतीं और कई महीने रहतीं। एक अमीर परिवार से सम्बन्धित होकर हररोज़ कई घण्टे लोगों के घरों को विज़िट करती और लंगर के लिए आटा दाल इक्ठ्ठा करतीं, स्त्रियों की मिथ्या छुड़वातीं, संगत का पता देतीं। बहुत वृद्ध होकर भी अपना भला करने का कोई मौका नहीं छोड़ती थीं। काश! हमें गुरू महाराज की रोशनी मिल सके और यह सचाई कि "परोपकार के बिना जिन्दगी मौत है" इसकी समझ आ सके और हमारे दिलों में गहरी उतर सके।

- बलदेव सिंह

इन सचाईयों को मत भूलो

(अध्यात्मिक चेतना के नये स्वर)

भगवान् देवात्मा ने जिन कई सचाईयों का प्रकाश और प्रचार किया है, उनमें से एक विचित्र सचाई का नाम परिवर्तन विषयक नियम या तत्व है। परिवर्तन के नियम या तत्व से हमारा तात्पर्य है कि नेचर अपने सारे रूप में प्रतिक्षण बदलती रहती है। नेचर के परिवर्तनशील होने से उसका प्रत्येक छोटा वा बड़ा जीवित वा अजीवित अस्तित्व परिवर्तित होता है। इस परिवर्तन विषयक नियम के अधीन सारा मनुष्य जगत भी है, और मनुष्य जगत का प्रत्येक मनुष्य भी है। इस परिवर्तन विषयक नियम के अधीन होने से प्रतिक्षण मनुष्य का न केवल शरीर बदलता है, बल्कि उसका आत्मा भी बदलता है। नेचर का यह परिवर्तन विषयक कार्य अटल है। दृष्टांत के तौर पर करोड़ों मनुष्यों का शरीर इस नियम की सत्यता को प्रकाशित करता है। क्या यह सत्य नहीं है, कि प्रत्येक मनुष्य का शरीर माता के पेट में बनता है। माता के पेट से बाहर आकर प्रत्येक मनुष्य असहाय पैदा होता है, चाहे वह मनुष्य महात्मा या बुद्ध, ईसा या मुहम्मद, चर्चिल या गांधी क्यों न हों। प्रत्येक असहाय बच्चा धीरे-धीरे परिवर्तित होना शुरू करता है। बच्चे से जवान हो जाता है। जवान से बूढ़ा हो जाता है। और बूढ़ा होकर स्थूल शरीर के विचार से मर भी जाता है।

इतिहास को पढ़ने वाला प्रत्येक जन जानता है, कि सदियों तक भारतवर्ष में मुग़लों का राज्य रहा है। इन मुग़लों की महारानियों में से एक का नाम नूरजहां था। उस समय की दुनिया में उसके सौन्दर्य की सारे भारतवर्ष में चर्चा थी। उसके सौंन्दर्य पर ही मोहित होकर शहनशाह जहांगीर ने उसको अपनी मलिका बनाने के लिए बहुत बड़ा संग्राम किया और उसे अपनी मलिका बनाकर बहुत बड़ा सौभाग्य समझा। ऐसी विख़्यात सुन्दरी क्या अपनी सुन्दरता को स्थिर रख सकी? क्या यह सच नहीं, कि उसकी आयु के बढ़ने के साथ उसका सौन्दर्य दिनों दिन घटता गया। वह मलिका होकर भी अपने शारीरिक सौंन्दर्य के घटने के कार्य को बन्द न कर सकी। क्या वह अपने बुढ़ापे को रोक सकती थी? क्या सारे भारत की महारानी होकर अपने स्थूल शरीर की मृत्यु को रोक सकती थी? जिस सुन्दर शरीर के प्रेम में शहनशाह जहांगीर तक भी फंस गया था, क्या वह सुन्दर शरीर नूरजहां के परलोक गमन के बाद क़बर में दफ़न नहीं किया गया, और कीड़ों के हवाले नहीं हो गया? क्या यही परिणाम प्रत्येक सुन्दर स्त्री और पुरुष का नहीं होता? जब यह निश्चय है, कि हमारा स्थूल शरीर परिवर्तन विषयक नियमानुसार क्या अपने यौवन और क्या अपने सौन्दर्य को खो बैठेगा, तब क्या यह मूर्खता नहीं, कि मनुष्य इस खोए जाने वाले यौवन और सौन्दर्य के पीछे मन को ललचाएं और दिल को तड़पाएं और अपने ही हाथों से अपने सुख और जीवन को बुरी तरह बरबाद करें।

इस परिवर्तन विषयक नियम का अटल कार्य मनुष्यात्मा के जीवन पर भी पूर्ण रूप से अधिकार रखता है। प्रत्येक मनुष्यात्मा अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं से क्षण-क्षण में परिवर्तित होता है और परिवर्तित होकर अपनी दशा में या तो पतित या नीच बनता है, या उच्च या श्रेष्ठ बनता है। परिवर्तन के अटल नियम के अधीन हमारे आत्मा में जो परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन का फल उसी समय हमारे जीवन में उत्पन्न हो जाता है। उसको कोई रोक नहीं सकता। इस फल को देने वाले की भी कोई ज़रूरत नहीं। नेचर के जिस अटल नियम को हम अपने जीवन में पालन करते हैं, उसके फल को हम रोक नहीं सकते। जिस

प्रकार ग़लती से भी विष खाने से हम चाह कर भी उसके परिणाम से नहीं बच सकते, उसी प्रकार नीच चिन्ताएं और नीच क्रियाएं करके हम चाह कर भी आत्मिक पतन को नहीं रोक सकते। एक-एक मुसलमान यह कह सकता है, कि मैंने बकरा ईद के अवसर पर अपने अल्ला का खुश करने के लिए भेड़, बकरी या गाय को कत्ल किया है, और इसलिए मैं पतित नहीं हुआ और नीच नहीं बनूंगा। लेकिन उसका यह कहना व्यर्थ है। पाप की गति पाप की गति ही है और वह पाप की गति पाप के ही फल उत्पन्न करेगी, चाहे हम किसी मिथ्या विश्वास के कारण उसे पुण्य की गति ही समझें। जिन हत्यारे खुदा परस्तों ने अपने मिथ्या विश्वास के अनुसार जहाद (मज़हबी जंग) करके लाखों बेगुनाह परिवारों को नष्ट किया और उनके बीवी बच्चों को गुलाम बनाया, वह हत्यारे आत्मिक जीवन के विचार से दुष्ट और पापी बन गए चाहे वह अपने आपको धर्मवान् समझते रहें।

एक जन को मैं मिलने के लिए गया। वह ईश्वर भक्त समझा जाता था और बड़ी कथाएं करता था। मेरे साथी ने उससे पूछा, कि क्या तुम रिश्वत लेते हो? उसने उनसे कहा कि जी हां लेता हूं। मेरे परम दयालु गुरु ने मुझे इस की आज्ञा दे दी है। परम दयालु गुरु रिश्वत को ठीक समझ कर रिश्वत के स्वाभाविक फल को रोक नहीं सकता था। रिश्वत लेने के साथ ही वह जन बद्दयानत होता गया और बद्दयानत होकर दिनों दिन आत्मा के विचार से पतित होता गया।

लाखों जन यह विश्वास करते हैं, कि वह झूठ, ठग्गी, कपटता आदि नाना प्रकार के बुरे कामों से धन इक्ट्ठा करके, यदि थोड़ा सा धन किसी गुरूद्वारे, किसी मन्दिर या किसी भलाई के काम में दे दें, तो उनको अपने पाप जीवन का फल भोगना नहीं पड़ेगा। कैसी ख़ौफ़नाक आत्मिक अन्धता! ठग्गी से आदमी ठग बन जाता है। कपटता की गति से मनुष्य कपटी बन जाता है। ठग या कपटी बनना आत्मा की नीच गति है। और आत्मा की प्रत्येक नीच गति आत्मा का पतन लाती है। और आत्मा के पतन से मनुष्य अपने आत्मिक बल या निर्माणकारी बल को खोता जाता है। आत्मिक अन्धकार-ग्रस्त मनुष्य यह बोध नहीं करता, कि यदि आत्मिक बल या निर्माणकारी बल नष्ट हो गया, तो मेरा अस्तित्व कहां रहेगा। शोक! कि मनुष्य अपने आत्मिक पतन से नहीं डरता है और यह भी नहीं जानता कि प्रत्येक मिथ्या और अशुभ की गति से मनुष्य पतित होता है। क्या हुआ यदि मनुष्य ने धन कमाया? क्या हुआ यदि मनुष्य ने जायदाद बना ली? क्या हुआ यदि मनुष्य ने सांसारिक वैभव या पदवी पाली? लेकिन उनके प्राप्त करने में उसने मिथ्या और अशुभ की जो गतियां ग्रहण की, उनसे अपने आत्मिक पतन को बढ़ाया, और अपने निर्माणकारी बल को खोया। कितना बड़ा घाटा!

नेचर का यह अटल नियम है, कि मिथ्या और अशुभ की गति किसी सूरत में भी उचित नहीं है। हो सकता है, कि किसी का लक्ष्य उच्च हो, परन्तु यदि उसको पूरा करने में उसकी गतियां मिथ्या और अशुभ मूलक हों, तो उसका आत्मिक पतन अनिवार्य है। किसी जन को किसी धर्म समाज में लाने के लिए झूठ का व्यवहार पूर्णत: अनुचित है। झूठ की गति आत्मिक पतन लाती है। हम अपने आत्मिक पतन से और किसी के आत्मा को शुद्ध नहीं बना सकते।

नेचर के इस अटल परिवर्तन कार्य के अनुसार जब हम प्रतिक्षण या तो उच्च वा श्रेष्ट बनते हैं, या पतित व नीच बनते हैं और जब हम एक स्थान में ठहर नहीं सकते, तब हमारा सबसे बढ़कर यह कर्तव्य है, कि हम उन गतियों का ज्ञान लाभ करें, कि जिन से उच्च या नीच बनते हैं, पतित या श्रेष्ठ बनते हैं,

और हम ऐसी सब गतियों से डरें कि जिनके करने से हम पतित दशा को प्राप्त होते हैं, और हम उन कुल गतियों को धारण करें, जिनसे हम श्रेष्ट बनें।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि हम सब के सब किसी न किसी समय इस पृथ्वी को त्याग देंगे। यहां के धन, पदार्थ और सम्बन्धियों को हमें छोड़ना ही होगा। परन्तु जिन गतियों को हम करते रहे हैं, उनके फलों से हम पीछा नहीं छुड़ा सकते। यदि हमने दुनियां के पदार्थों और अन्य सम्बन्धियों को पाने और रखने की ख़ातिर अशुभकर गतियां की हैं, तो हमारा आत्मिक पतन अवश्य हो गया है। और यह आत्मिक पतन लम्बे काल तक परलोक में भी हमारा पीछा न छोड़ेगा। मिथ्या और अशुभकर गतियों का कैसा भयानक परिणाम!

(पी. वी. कनल)

भविष्य काल में मनुष्य मात्र का धर्म क्या होगा?

(अमृत - वर्षा)

मैंने एक कहानी पढ़ी है, कि एक आठ वर्ष के बच्चे के माता-पिता दोनों गुजर गए। माता ने अपने प्रेम से भरकर इस इकलौते और प्यारे बच्चे के लिए अच्छे अच्छे कपड़े बनाकर एक ट्रंक में बन्द करके रखे थे। इन दोनों के गुजरने के बाद पड़ोसियों न उनकी थोड़ी सी जमीन काश्त करके उसकी पैदावार उस बच्चे को देनी आरम्भ की। बच्चे के खाने पीने और पहनने के लिए कोई खास जिम्मेवार जन नहीं था। जब यह बच्चा 14 - 15 साल का हो गया, तब उन दिनों में उसे कसबे के सरदार की लड़की का जन्म दिन मनाया जा रहा था और सब छोटे बड़े जिमीदारों और काश्तकारों को निम्नत्रण दिया गया था, कि वह सब सरदार के लंगर में खाना खाएं और सरदार की लड़की का दर्शन करें। उस लड़के के दिल में यह उमंग उठी, कि मैं अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर शहजादी के दर्शन करूं। उसने अपना ट्रंक खोला, जिसमें उसकी माता ने उसके लिए कपड़े बनाकर रखे थे। अपने लिए वही सूट निकाला जो आठ साल के बच्चे की उम्र का था। अब चौदह प्रन्द्रह साल के बच्चे ने वह सूट पहना। उस बेचारे को पता न लगा, कि मै इस सूट में बहुत भद्दा नजर आता हूं। वह यह सूट पहनकर लंगर में पहुंचा, जब सब खाना खा चुके, तो शहजादी अपने दर्शन देने के लिए आई। सबने उसका दर्शन किया। इस नौजवान लड़के ने भी आगे बढ़कर अच्छी तरह दर्शन करना चाहा। ज्यों ही लड़की ने उसकी तरफ देखा, त्यों ही उसने चीख मारी और यह कहा, पिता जी! शैतान आ गया। यह गरीब बच्चा डर के मारे वहां से भागा और अपने घर पहुंच कर बहुत रोया।

इस समय के मनुष्य मात्र का भी ऐसा ही बुरा हाल है। जो विचार का लिबास उनके पूर्वजों ने बना रखा था, वही भद्दा लिबास पहनकर अब करोड़ों मनुष्य अपने ख्यालात और कर्मों के विचार से वैसे उक्त नौजवान की न्याईं भद्दे नजर आते हैं। कई विचारशील मनुष्य तो बोल उठते हैं, कि यह कैसा अन्धेर है, अब सुसभ्य जमाने में जंगली ख्यालात के और जंगली कर्मों के लिबास पहने हुए आदमी फिर रहे हैं।

जंगली ख्यालात क्या? जंगली ख़्यालात वह कहे जाते हैं, कि जो मनुष्य मात्र में बचपन के जमाने में उत्पन्न हुए। मनुष्य मात्र ने बचपन के जमाने में प्रत्येक घटना का कारण नेचर के नियम में नहीं देखा, किन्तु किसी अस्तित्व में देखा था। यदि किसी जंगल में आग लग गई, तो जंगली जमाने के आदमियों ने

यह कहना आरम्भ किया कि किसी देवता ने आग लगा दी। यदि तूफान आया या बिजली कड़की, मूसलाधार बारिश हुई, या खौफनाक भूंचाल आया, तो जंगली आदमियों ने यही समझाा कि कोई देवते क्रोध में आकर हम पर यह मुसीबतें डाल रहे हैं। इसलिए देवताओं की उत्पत्ति हुई। नेचर के नियम का ज्ञान नहीं हुआ। जुदा जुदा देवताओं को मानने वालों ने अपने अपने देवताओं की खातिर जंग किए और प्रत्येक यही कहने लगा, कि मेरा देवता सब से बड़ा है। यहूदियों के देवता का नाम जहोवा था। यहूदियों ने उसके नाम पर जंग करके उसकी पूजा स्थापन की। जब हजरत ईसा आए, तब उन्होंने जहोवा की पूजा की, और सब ईसाई लोगों ने इस जहोवा की पूजा आरम्भ कर दी। जब मुहम्मद साहिब आए, तब उन्होंने भी उस जहोवा की पूजा की और इस्लाम का देवता वही जहोवा हो गया। आर्य समाज में ब्रह्म समाज, इस्लाम और इसाई मजहब से प्रभावित होकर इस जहोवा की पूजा में लग गए। इसी तरह एक ऐसे जत्थे का खुदा करोड़ों खुदा परस्तों का देवता बन गया और उस देवता के नाम से बाइबल, कुरान आदि किताबें इलहामी किताबें समझी गई। अब इलहाम क्या है? इलहाम तो उस मिथ्या देवता का विचार या उसकी शिक्षा कहा जाता है। मनुष्य उस देवता को कुल ज्ञान का दाता समझकर उसके इलहाम के दिलदादा हो गए। इसलिए इलहाम का राज्य रहा न कि विज्ञान का।

अब यह जमाना विज्ञान का है। इस विज्ञान के जमाने में इलहाम का राज्य ऐसा अनुभव होता है, जैसा सोलह साल के बच्चे को आठ साल के बच्चे के कपड़े पहनाना। इलहाम की शिक्षा जंगली जमाने से शुरू हुई थी, इसलिए जंगली जमाने की शिक्षा आज कल विज्ञान के जमाने में जंगली ही नजर आएगी। इलहाम सिखाता है कि हमारी पृथ्वी एक मैदान है, न कि गोल है और हमारी पृथ्वी एक जगह खड़ी है और सूर्य उसके गिर्द घूम रहा है। आसमान एक छत है जो बिना स्तून के खड़ी है, यह सारा विश्व खुदा साहिब ने छः दिन में बनाया, और सातवें दिन आराम किया। और खुदा के भेजे हुए जो पैगम्बर हैं। इस प्रकार मिथ्या शिक्षा मजहब की शिक्षा बताई जाती है, और मजहब का नाम इस मिथ्या देवता की पूजा है, न कि मनुष्य मात्र के साथ शुभ आचार और आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान लाभ करना। इसलिए भविष्य का धर्म इलहाम का धर्म नहीं होगा, किन्तु विज्ञान का धर्म होगा। व्यक्तिगत आदेश नहीं रहेगा, किन्तु नेचर के नियमों का हुक्म चलेगा। कहलाने वाले करिश्में पागलों की बकवास समझी जाएगी और वैज्ञानिक सत्य शिक्षा मनुष्य मात्र के लिए एक मात्र ग्रहण करने की शिक्षा समझी जाएगी।

विज्ञान मूलक सत्य शिक्षा क्या है? विज्ञान मूल्क सत्य शिक्षा वह है, कि जो नेचर की सत्य घटनाओं और उसके अटल नियमों पर स्थापित हो। विज्ञान सिखाता है, कि नेचर एक मात्र सत्य है, नेचर से बाहर कुछ नहीं। जो कुछ है नेचर के भीतर है और नेचर के नियमों के अधीन है, इसलिए नेचर ही सत्य ज्ञान का पूर्ण भण्डार है। और नेचर को छोड़कर जो भी ज्ञान है, वह सब कल्पना मूलक है। प्रत्येक देव समाजी को भगवान् देवात्मा ने इस हकीकत का दान दिया है। देव समाज में कोई जन प्रविष्ट नहीं हो सकता, जब तक वह कुल देवी देवताओं अर्थात् खुदा, परमात्मा, ईश्वर, गाड, अल्लाह, वाहेगुरू आदि के मिथ्या विश्वास को न त्यागे और जो अन्य मिथ्या पूज्य देव हैं, उन सबके सम्बन्ध में अपना विश्वास न छोड़े। इसलिए भगवान देवात्मा ने देवी देवताओं के जत्थे से अपने शिष्यों की सदा के लिए रक्षा कर दी और नेचर को सदा क लिए सत्य ज्ञान का भण्डार जाहिर करके शिष्यों को

उस ज्ञान के भण्डार से जोड़ दिया। भगवान देवात्मा का अपने शिष्यों पर यह उपकार एक अद्वितीय उपकार है।

विचार की दुनिया को छोड़कर जो कर्म की दुनिया है। उसमें भी मनुष्य मात्र का बहुत बुरा हाल है। मनुष्य की नस्ल पशुओं की नस्ल में से उत्पन्न हुई एक नस्ल है। जब मनुष्य उत्पन्न हुआ, तब पशुओं की तरह नंग धड़ंग फिरता था। जब उन्नत शील विचार शक्तियों से परिचालित होकर सोचने लगा, तब पहली चीज जो उसने ईजाद की वह आग का जलाना था। आग जलाने के ज्ञान से वह जंगली हालत से बहुत ऊपर चला गया। इसके भिन्न इस जंगली अवस्था के मनुष्यों ने एक दूसरे के साथ बात चीत करने का उपाय ढूंढ लिया और इन दो बरकतों को पाकर यह सभ्यता की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। और जत्थे की जिन्दगी बसर करने लगा। जत्थे का जीवन इसलिए व्यतीत करने लगा, कि वह अपने चारों ओर के खा जाने वाले पशुओं और मनुष्यों को देखकर अपनी रक्षा के लिए अपने सम्बन्धियों को साथ रखकर जीवन बसर करने लगा। ज्यों ही मनुष्य ने जत्थे की जिन्दगी बसर करनी आरम्भ की, त्यों ही क्या जत्थे के अन्दर और क्या जत्थे के बाहर उसे क्या बर्ताव करना चाहिए, उसका विचार आरम्भ हुआ और इख़लाकी जीवन का आरम्भ हुआ। जत्थे की मदद के लिए जिन भावों की जरूरत थी, वह उच्च इख़लाक के भाव समझे गए। जत्थे की रक्षा के लिए बहादुरी की आवश्यकता थी, इसलिए बहादुरी उच्च गुण समझा गया। जत्थे की रक्षा के लिए वफादारी की जरूरत थी, इसलिए जत्थे के सम्बन्ध में वफादारी उच्च गुण समझा गया। जत्थे के बाहर के वजूदों के सम्बन्ध में यह इख़लाक था कि दूसरे जत्थे के घरों को जला दो, उनका माल लूट लो, उनकी स्त्रियों को पकड़कर ले आओ। उनके पुरुषों का खून कर दो। इस प्रकार के बदइख़लाक का नाम इन जत्थों की नजर में उच्च इख़लाक था। इस प्रकार के इख़लाक का जामा अब इस समय की सुसभ्य जातियों ने भी पहन लिया है एक बार जब इल्मदीन ने राजपाल का कतल किया, तब सरकार ने कातिल को खूनी ठहरा कर उसको फांसी दे दी। तब उसकी लाश को सम्मान देने के लिए एक लाख से भी अधिक मुसलमान कबरस्तान में इकट्ठे हुए और वर्षों से इल्मदीन कबर की बहुत कदर की जाती है। यह जंगली जमाने का इख़लाक है, जो मजहब के नाम से मुसलमानों ने ग्रहण किया। इसी तरह की जब ईसाईयों की मुस्लमानों से सलीबी जंग आरम्भ हुई, तब ईसाईयों के बड़े मुरशद अर्थात् पोप ने अपने ईसाई सिपाहियों को सम्बोधन करके कहा था कि ऐ बहादुरो! जाओ और जाकर मुसलमानों को तबाह करो, तुम्हारे संगीन से संगीन जुर्मों को खुदा की तरफ से मैं क्षमा करा देता हूं। इन संगीन जुर्मों में जिन जुर्मों को उचित समझा था, उनमें बदचलनी थी, लूटना था, घरों को आग लगाना था, खून की नदियां बहाना था। इस जमाने में पाकिस्तान की पुकार उस जंगली जमाने के इख़लाक की आवाज है। मुसलमानों का मजहब एक जत्था है। उसमें अब तक भी जत्थे का राज्य है। कौमी जिन्दगी भी उस जंगली जमाने के जत्थे के इख़लाक की आवाज है। भारत वर्ष में अगर किसी अंग्रेज स्त्री या पुरुष को कोई देसी कत्ल भी करदे, तो भारत के अन्दर करोंड़ों जन इस कदर बावेला नहीं मचाते, जिस कदर अंग्रेज से अगर कोई देशी मारा जावे, तो मचाते हैं। यूरोपियन का भी यही हाल है। जहां कौम की प्रकृति है, वहां जत्थे की प्रकृति है। जहां खुदा परस्त मजहब का राज्य है, वहा जत्थे का राज्य है। बाह्यक विचार से मनुष्य सुसभ्य है, परन्तु आन्तरिक प्रकृति के विचार से उनका इख़लाक जंगली इख़लाक है। यह खौफनाक इख़लाक भविष्य काल में मनुष्य मात्र का इख़लाक नहीं रहेगा।

आगामी काल में मनुष्य मात्र इस सत्य का प्रेमक हो जाएगा, कि मनुष्य का सम्बन्ध अपने जत्थे के साथ नहीं, किन्तु उसका सम्बन्ध कुल मनुष्यों के साथ है। जब मनुष्य मात्र का अंग होकर कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य को हानि पहुंचाएगा, किसी मनुष्य का भी माल लूट लेगा, किसी मनुष्य की बहू बेटियों के साथ बुरा अमल करेगा, किसी मनुष्य की इज्जत या जान पर हमला करेगा या किसी मनुष्य के उचित अधिकारों पर हमला करेगा, तो वह पापी और महा पापी ठहराया जाएगा, और जब मनुष्य मात्र के साथ जुड़कर मनुष्य उसकी सेवा में लग जाएगा, तब स्वार्थ और जत्थे की जिन्दगी बदल जायेगी। जत्थे के प्रेम को प्रेम नहीं समझा जायेगा। मनुष्य मात्र के लिए प्रेम ही सच्चा प्रेम समझा जायेगा। भगवान देवात्मा ने यह सच्चाई पेश की है, कि मनुष्य न केवल मनुष्य मात्र का अंग है, किन्तु कुल नेचर का अंग है। इसलिए वह मनुष्य जगत, पशु जगत, उद्भिद जगत और भौतिक जगत या किसी जगत के सम्बन्ध में अनुचित क्रिया करेगा या उसकी हानि करेगा, तब वह महा पापी हो जायेगा और चारों जगतों से उपकार पाकर अगर वह इन चारों जगतों के वजूदों के सम्बन्ध में सेवा का भाव नहीं धारेगा, तो वह उच्च इखलाक का मालिक नहीं हो सकेगा। देव समाज को भगवान देवात्मा ने निहायत कीमती सत्यों और तत्वों की अमानत दी है और भविष्य में मनुष्य मात्र के लिए सत्य धर्म की जो अमानत प्रदान की है, उसका ऋण प्रत्येक देव समाजी पर है। प्रत्येक देव समाजी एक असाधारण आत्मिक खजाने का चौकीदार है। अगर वह अपनी नीच प्रकृति से इस खजाने की पाक अमानत में ख़्यानत करता है, तो वह महा पापी बनता है। एक एक देव समाजी इस उच्च अधिकार को पाकर जैसा कुछ धनी और गुणी है, क्या उसका यह महा कर्तव्य नहीं, कि वह अपनी नीच भावों से परिचालित होकर या जत्थे की प्रकृति समाज में लाकर विश्व व्यापी इख़लाक और रूहानी बरकतों को अपने हाथ से न खोये। क्योंकि जत्थे का इख़लाक नीच इख़लाक है। विश्व व्यापी इख़लाक श्रेष्ठ इख़लाक है। भगवान देवात्मा जो हमे इस सत्य की शिक्षा दे गए हैं वह इस कदर शानदार है, कि वह आने वाली नस्लों के लिए एक असाधारण आत्मिक खजाना होगी।

गृह प्रवेश

चण्डीगढ़ (12-10-18) :- सन्मान के योग्य श्रीमान ज्ञान चन्द जी (गोनियाना) ने अपने सुपुत्र श्री के नये गृह के प्रवेश पर बड़े हर्ष से सभा रखवाई। इसमें दूर स्थानों से आये हुए परिवारिक जन भी थे। बठिण्डा से श्रीमान बल बहादुर सिंह जी, श्रीमान सुखदेव जी गोनियाना उनके प्रेम पूर्वक आग्रह से दोपहर में ही पहुँच गये थे। चण्डीगढ़ से विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी के साथ में श्रीमान वर्मा जी श्रीमान गोपाल कृष्ण जी भी पहुँच गये।

शाम 4:30 बजे सभा शुरू हुई। सबसे पहले भजन का गान किया। भजन के बाद पूजनीय भगवान की छवि का फूलों के हार से अर्चन किया। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सर्वप्रथम सब परिवारिक जनों को उनके गृह प्रवेश की खुशी में अपने सुन्दर भावों का प्रकाश किया।

सभापति जी ने सभा के शुरू में ब्यान किया कि देव समाज क्या है, इसके क्या विचार हैं, इनके बारे में बताया कि यह सांईस के विचारों को मान्यता देती हैं और सांईस वह होती है जो सच्चाई के विरुद्ध जो भी हमारे में विश्वास-संस्कार है उन्हें कुछ मान्यता

नहीं देती। अपने झूठे विश्वासों व संस्कारों से हम मनुष्यों ने बहुत से पौधों व जानवरों को भी ईष्ट बना कर उनकी पूजी करनी शुरू कर दी है। देव समाज अपनी साईंसी विचार धारा के कारण ऐसे किसी भी कल्पित मिथ्या विश्वास को मान्यता नहीं देती। देव समाज का मैंम्बर भी तब कोई बनता है जब कोई जन आठ पापों से मुक्ति प्राप्त कर जाए और अन्य मिथ्या विश्वास छोड़ जाए। देव समाज का उच्च वातावरण पहले इन हैवानियत भरी बुराईयों को दूर करने में बहुत बड़ी सहायता करता है। इसके अलावा समाज में आने वाला जन अनेक बरकतें लाभ करता है। मनुष्य को अपने पहले किये गये पापों, अपराधों के लिए पश्चाताप करवाता है और की हुई हानियों का परिशोध भी करवाता है। इससे आगे समाज द्वारा अच्छा इन्सान बनाने का काम किया जाता है। इन्सान का अच्छा बनना क्या है इसका विस्तार किया गया। अच्छापन हृदय की अच्छी अवस्था का नाम है। कोई जन धन-सम्पत्ति, एशो-ईशरत के सामान, व डिगरियाँ लेकर ही अच्छा नहीं होता। जिस जन के अन्दर श्रद्धा-सम्मान नहीं अर्थात किसी के कोई सद्गुण, किसी की कोई महिमा, बड़पन नही देखता वह अच्छा इन्सान नहीं बन सकता। शुक्रगुज़ारी (एहसान मानने) के बिना भी हृदय अच्छा नहीं होता। इसके ईलावा दया (हमदर्दी) से खाली हृदय भी बिल्कुल अच्छा नहीं है, दया के बगैर मनुष्य को किसी दुखिया का दुख नहीं दिखता व अनुभव होता, और वह किसी के काम नहीं आता। और तो और अपने घर के सम्बन्धियों के दुख दर्द को भी वह पहचान नहीं पाता। कठोर हृदय वाले जन को अपनी पत्नी का, अपने निकटी का दुख नहीं दिखता अतः वह दयावान नहीं तो अच्छा इन्सान कैसे होगा। इसके बात बताया गया कि हमारे वजूद में सबसे कीमती चीज़ हमारी जीवनी शक्ति या आत्मा है उसका ज्ञान व बोध प्राप्त करना उसकी हानि को जानना व उस हानि से बचकर जीवनी शक्ति को विकसित करना मनुष्य का परम लक्ष्य है। परन्तु प्रत्येक जन अन्धेरे में रहकर धन-सम्पत्ति, जायदाद को ही अपना मुख्य लक्ष्य बनाए हुए है। धन सम्पत्ति का अनुरागी जन भी अन्य नीच अनुरागी जनों की तरह ही पापों में व दुखों में फंसता जाता है। हर एक मुनष्य अहम, काम वासना, धन-धरती व मोह के बन्धन में जकड़ा हुआ है वह परलोक में जाकर मृत्यु के बाद अधमलोक में ही घुल-घुल कर खत्म होने के लिए मजबूर होता है।

श्रीमान ज्ञान चन्द जी के बारे में भी बताया कि देव समाज में आने के बाद उनके जीवन में मिथ्या विश्वासों के साथ अनेक कुव्यसन दूर हुए हैं। शराब छूटने के साथ साथ अन्य कई बदपरेहजियों से छुटकारे के कारण बहुत बढ़ा हुआ पेट कम हुआ है। बेहतरी आयी है।

बाद में सभापति जी ने बताया कि मनुष्य को अपने अनुभवों से सबक लेना चाहिए। जिस संगत में मिथ्या व बुराईयों से कुछ नफरत न पैदा होती हो, बल्कि पाप व मिथ्याएँ बढ़ती हों उनसे खबरदार रहकर उच्च संगत से जुड़कर फायदा उठाना चाहिए।

सभापति जी ने देवशास्त्र के चौथे भाग से गृह सम्बन्धी आदेशों का पाठ किया वा बताया कि हमारे सभी उपकारियों की तरह घर को भी उपकारी रूप में मानकर इसकी अच्छे भावों से सम्भाल करनी चाहिए।

सभा के अन्त में फिर सभापति जी ने परिवारिक जनों को अपनी तरफ से हार्दिक बधाई दी वह मंगल कामना की। गुरू महाराज की चार बार जय-ध्वनि की गयी। इस सभा में 40-50 जनों को देव समाज के बारे में जानने का अवसर मिला व ....का दान प्राप्त हुआ।

-एक सेवक

एक साधन

मेरे खाने-पीने की लालसा मेरा बुरा हाल कर रही है। इस आकर्षण से मेरा दूसरों के खाने में क्या बना है उसे देखने सूँघने और हो सके तो चैक करने का मन करता है। बाजार में जाकर खाने-पीने की रेहड़ियों पर मन ललचाता है, उधर देखता जाता हूँ। कुछ-कुछ सफाई की सोच वा रुपये-पैसे ज्यादा लगने की वजह से नहीं खरीद पाता, नहीं तो शायद हर चीज़ को चैक कर रहा होता और उनका आदी होता। इस लालसा के कारण बहुत बार ऐसा भी हुआ है जैसे कि कोई भिखारी भीख की लालसा रखता है। बिना बताए कई बार दूसरों की वस्तुओं को चैक करने को दिल करता है, कई बार खा भी लेता हूँ। जीभ की इस लोलुपता के कारण बाज़ार से उल्ट-पुल्ट खाने से पैसों को व शरीर को बहुत बार खराब किया है। जब भी बाजार जाता हूँ, गोल गप्पे, समोसे आदि याद आते रहते हैं। किसी वजह से खरीद कर नहीं खाता पर मन में कितने समय तक वही ख्याल चलते रहते हैं। शायद पैसा खूब होता तो खाने-पीने की इस बिमारी का और भी बहुत ज्यादा गुलाम होता।

अपनी यह क्रियाएं गुलामी के रूप में दिख रही हैं। बहुत दुःख हो रहा है कि मेरी आज़ादी क्याहै? मैं कैसा वजूद हूँ? ना जाने किस-किस नीच गन्दगियों के आकर्षणों का भूखा हूँ?

अपनी इस गन्दी आदत के कारण मैं चोर भी बना हूँ, झूठा और मक्कार भी बना हूँ। मुझे याद आ रहा है कि बचपन से ही यह आदत मेरे ऊपर हावी है। शुरू-शुरू में छोटे होते अपने घर से खाने की वस्तुएँ उठा के खाता था। एक बार चोरी करके मैंने अपने कमीज में बिस्कुट भर लिये जिसको पिताजी ने देख लिया। उसके बाद उस तरह की मोटी चोरी बन्द हो गई और मैं यही ख्याल करता रहा कि अब मैं चोर नहीं रहा क्योंकि घर में मुझे मनचाहा खाने की छूट थी। परन्तु अब इस पक्ष में और भी घटनाएं और उनका और भी नुकसान महसूस हो रहा है। मैं अक्सर घर पर चोरी से दूध के पतीले से मलाई उतार कर खा जाता था। एक बार इस तरह करते हुए देखकर किसी पड़ोसी ने मजाक में मुझे रोका भी था फिर भी मैने अपनी इस गति को घृणा-योग्य नहीं देखा बल्कि इस घटना को मैं बड़ी शान से दूसरों को बताता कि मैं मेरे नाम के अनुरूप ही मक्खन मलाई बड़े शौक से खाता हूँ।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ मेरा मीठे और नमकीन का भी शौक बढ़ता गया। अपने घर में भी और बाहर बाज़ारों से भी खाते रहने से बहुत बदपरहेज़ हो गया। जिससे पेट भी खराब रहता व कई और रोगों ने भी घेर लिया। कुछ जो जन्म से ही शरीर कमजोर था बल्कि बदपरहेजियों ने मेरा मेदा खराब कर दिया जीभ की गहरी लालसा के कारण, सही और शुद्ध न खाने से शरीर में कमजोरी भी बनी रहती। बुखार आदि भी होता ही रहता। शायद अबोधता और बदपरहेजियों के कारण इम्यूनिसिस्टम (प्रतिरोधक क्षमता) ही खराब हो जाती था। खून पूरा बनता नहीं था, हृदय की धड़कन भी बढ़ जाती थी। आँखों के आगे अन्धेरा भी आ जाता था।

इस बढ़े हुए महा भयानक रोग ने आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद यहाँ तक कि कर्जाई होने के बावजूद पीछा नहीं छोड़ा, अन्धेरा पैदा किए रक्खा और मैं अपने प्रति अनेक मिथ्या विचारों को रखकर इस रोग को खुशी-खुशी पालता रहा। यह रोग काफी हद तक अभी भी मौजूद है परन्तु मैंने अपने आप को ढक कर रखा हुआ है जिसके कारण मैं स्वयं भी अपने आप को अच्छा समझता हूँ और दूसरे भी मुझको अच्छा जानते हैं।

हे परम पूजनीय भगवन। मुझे आपके प्रभावों की प्रेरणा से दुःख और शर्मिन्दगी हो रही है। मुझे इस महा भयानक गुलामी से निकलने का रास्ता दिखाओ। आपकी शक्ति की दान प्राप्ति की योग्यता हासिल हो। मेरा यह रोग दूर हो।

-एक सेवक

श्राद्ध सभा

30-09-2018 रविवार :- हमारे साथी सेवक श्रीमान चमन जी (नेपाल) की माताजी स्व. श्रीमती हीरा जी के सम्बन्ध में श्राद्ध सभा उनके वर्तमान निवास स्थान मकान न. 2012, सैक्टर 69, चण्डीगढ़ पर रखी गयी। इसके लिए श्रीमान जगदीष जी ने अपनी देखरेख में तैयारी करवाई। सभा स्थल पर टैन्ट, सफेद चादरों की बिछाई व कुर्सियों आदि का प्रबन्ध किया गया। चाय-पान व दोपहर के खाने का प्रबन्ध भी किया गया। गुरू महाराज का सुन्दर फोटो ऊँचे स्थान पर रखा गया। सुबह 10:00 बजे सभा शुरू की गयी जो कि श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। सबसे पहले दुनिया की असारता को दर्शाता एक भजन "बागे दुनियाँ का नजारा चन्द रोज" गाया गया। इसके बाद गुरू महाराज की छवि का फूलों के हार द्वारा अर्चन किया गया। देव स्तोत्र का गान व इसकी व्याख्या की गई। इसके उपरान्त देह-त्यागी की छवि का सब परिवारिक जनों व उपस्थित जनों द्वार फूलों व हारों द्वारा सन्मान प्रदर्शन किया गया। सभापति जी ने देव समाज अथवा देव धर्म की विशेषता के बारे में ब्यान किया। इसमें दूसरे धर्मों में प्रचलित जो कुछ मिथ्या विश्वास व मिथ्या रीति-रिवाज जैसे कि किसी तालाब अथवा सरोवर में डुबकी लगाना, किसी विशेष मन्त्र आदि का जाप, धर्म के नाम से कोई मिथ्या चिन्ह व किसी वेशभूषा, किसी मिथ्या देवी-देवता की पूजा अर्चना आदि को धर्म नहीं समझा जाता। देव धर्म विज्ञान (साईंस) पर आधारित नियमों को मानता है। सारे मनुष्य-मात्र का अपने कुल विश्वासों व रीति रिवाजों को विज्ञान की कसौटी पर परखकर मानने में ही सच्चा भला है।

देव धर्म के बानी ने फरमाया है कि अच्छा इन्सान बनना ही धर्मवान बनना है, इन्सान अच्छा बने बगैर कहीं कोई किसी भी तरीके का पूजा-पाठ करता हो, किसी को मानता हो वह धर्मवान नहीं है। फिर बताया गया कि कम से कम 8 पापों और मिथ्या विश्वासों को छोड़ने के बाद कोई जन देव समाज का सदस्य बनता है। श्रीमान चमन जी, उनकी धर्मपत्नि श्रीमति निशा जी व उनके बच्चे इन मिथ्या विश्वासों व बुराईयों को छोड़ चुके हैं। श्रीमान चमन जी पहले जीव हत्या करते थे, वे पेड़ों को हिलाकर जब ऊपर से जानवर गिरते तो उन्हे मारकर खाते थे, कच्चा माँस भी खाते थे। वे पहले पहल देव समाज में आए तो अपने माँस भक्षण की क्रिया को सही साबित करने की जिद करते थे। सभापति जी ने सभा में मौजूद कितने सेवकों के बारे में बताया कि वे भी उक्त मिथ्या और पापों से बचे हुए हैं।

इसके बाद "परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएंगे" भजन का गान हुआ। सभापति जी ने फरमाया कि मनुष्य जब से पैदा हुआ है उसके अन्दर तीन सवाल उपजे हैं (i) मनुष्य कहां से आता है (ii) मनुष्य ने जीवन में करना क्या है और (iii) मरने के बाद क्या होता है? मनुष्य और कहीं से नहीं आता बल्कि माता पिता द्वारा जन्म लेता है। मनुष्य शरीर और इसकी जीवन शक्ति (आत्मा) से संयुक्त अस्तित्व है। शरीर की ही तरह आत्मा भी जन्म लेता है। इस जीवन में मनुष्य ने अपनी मूल ईच्छा जीवित रहने और सुखी रहने के लिए ऐसे नियम पूरे करने हैं जिससे उसकी आत्मा जीवित रहे और उचित सुखों के भागी बने। बुराईयों से आत्मा का बल अथवा उसकी निमार्णकारी शक्ति घटती है और उच्च भावों से दूसरों के सम्बन्ध में निर्माणकारी गतियाँ करने अर्थात दूसरों की सेवा सहायता करने से आत्मा जीवित रहती और विकास पाती है। मृत्यु के बाद मनुष्य की जीवनी शक्ति

(आत्मा) उसी प्रकार अपने सूक्ष्म सैलों को सिर के निकट इक्टठा करके नया सूक्ष्म शरीर कुछ घंटों में निर्माण कर लेती है जैसे उसने माता के गर्भ में माता के रक्त से स्थूल सैलों को लेकर अपने स्थूल शरीर का निर्माण किया था। इसके बाद मृत्यु के समय किन बातों का बहुत ख्याल रखने की जरूरत है, उसके सम्बन्ध में बताया गया। फिर सच्चा श्राद्ध क्या है इसके बारे में भी बताया गया कि अपने स्वार्थ वश परलोक वासी आत्मा को भुला नहीं देना चाहिए, बल्कि सदा याद रखना चाहिए एवं उनसे हितकर सम्बन्ध बनाना चाहिए। इसके लिए हमें उनके गुणों व उनके उपकारों के आगे झुकना चाहिए, उनके सम्बन्ध में हमारी ओर से हुई गलतियों के लिए पश्चाताप व हानि परिशोध करना चाहिए व उनकी शुभ इच्छाओं को पूरा करने का यत्न करना चाहिए। फिर देह त्यागी के जीवन के बारे में उनके गुणों व कार्यों को बताया गया। वे बहुत भोले स्वभाव की व अच्छा हृदय रखती थीं, उनमें हमदर्दी का भाव भी था। जब उनके घर कोई काम करने आता तो वह उन्हें भरपेट खाना खिलाती व उनके बच्चों के लिए भी अलग से देती। रुपयों-पैसों के अनुचित मोह से ऊपर थी वह आम स्त्रियों की तरह दूसरों से कभी लड़ती झगड़ती नहीं थी, अपने परिवार के लिए विशेष त्यागी व सेवाकारी थीं। नेपाल में अपने घर से मील डेढ़ मील की गहराई पर नीचे से पानी के 3-4 मटके एक साथ उठाकर दिन में कई बार लाती, बड़ी मेहनतकश थी। वे स्वभाव में मिलनसार थी। अपनी पुत्रवधु को हमेशा बेटी समान समझा। एक पुत्र की मृत्यु हो गयी थी, दूसरा घर छोड़कर चला गया था। इस सदमें से इनके हृदय को बहुत चोट लगी और सदा के लिए रोगी होती चली गयी।

इसके उपरान्त सभापति जी ने देहत्यागी आत्मा के भले के लिए सब हाजरीन से मिलकर शुभकामना करने की अपील की। फिर दिली भावों से "हे देह त्याग सम्बन्धी हमारे, करें मिल कमना शुभ की तुम्हारे" भजन का गान किया गया। सभापति जी ने भरे दिल से देह त्यागी आत्मा की परलोक में सहायता, सुरक्षा, धैर्य और शान्ति के लिए शुभ कामना की। सभा के अन्त में गुरू महाराज की जै ध्वनि की गई। इस सभा में 100 के करीब हाजरी थी। इसमें चमन जी के पारिवारिक जनों व अन्य उपस्थित जनों से 6700/- रूपये का दान इकटठा हुआ। बाद में सभी आए हुए जनों को परिवार द्वारा उत्तम भोजन कराया गया। यह सारी कार्यवाही काफी प्रभावशाली रही। सभा में परलोक वासी आत्मा के सम्बन्ध में उनकी पुत्रवधू, पुत्र, पोते, पोतियों की ओर से वर्णन किया गया।

-एक सेवक

शोक समाचार

बहुत शोक कि हमारे नेक साथी सेवक हरपाल सिंह जी पुंडीर अचानक अपने मकान न. 3024, सैक्टर 44-डी में 24 अक्तूबर, 2018 की सुबह परलोक सिधार गए। वह 91 वर्ष के थे। 2 दिन पहले उन्हें साँस घुटने की तकलीफ हुई, कोई ईलाज कामयाब न हुआ और वह दम तोड़ गए। वह समाज के अच्छे वर्कर थे। वह अपने पीछे 2 पुत्रियों वा एक पुत्र और अपनी नेक धर्म पत्नी छोड़ गए हैं। हम परलोक में उन्हें हर सम्भव सहायता मिलने वा उनके आत्मा की शान्ति की कामना करते हैं। सब सम्बन्धियों को धीरज प्राप्त हो। ऐसी शुभ कामना है।

-बलदेव सिंह

श्राद्ध सभा पर भाव प्रकाश

बहुत बहुत सन्मान के योग्य मेरी प्यारी माँ! आप इस दुनिया को अलविदा कह के चल बसी। मुझे इस बात का बहुत दु:ख है कि आप हमें छोड़कर चली गई, परन्तु इस बात से सन्तुष्टि है कि आप अपनी दु:ख भरी बिमार जिन्दगी से चली गई। माँ मुझे पूरा विश्वास है कि परलोक में उच्चलोक वासी जैसे (माता जी, शशी बहन जी, आपके माता-पिता, आपके संगे सम्बन्धी) आपकी मदद कर रहे होंगे। माँ, आप हमें छोड़कर चली गई इस बात का मन में बहुत बहुत दु:ख है जिसकी कमी कभी पूरी नहीं हो सकती, फिर भी हमें आपने आपको संतुष्ट करना पड़ेगा क्योंकि हर किसी का मरना निश्चित है। माँ वैसे तो आप बहुत सीधी-साधी भोली-भाली सी थी, परन्तु हमारे लिये बहुत कुछ थी जन्मदाता, पालन कर्ता, रक्षा कर्ता थी। आज जो हमारे सम्पूर्ण अंग ठीक दिखते हैं, उन्हें सही सलामत बनाने में आपका ही सबसे बड़ा योगदान है। माँ मैं जब भी घर आता था तो आप कितना खुश होती थी, आपके सारे कष्ट-दु:ख दूर हो जाते थे। परन्तु अब कौन खुश होगा आप तो हमें छोड़कर चली गई। आप मुझे इतना प्यार करती थी कि जब घर में पिता जी के साथ तू तू मैं मैं होती तो पिता जी मुझे फोन करते, मैं आपको डांटता, तो क्या माँ कहके फोन भी करता तो आप समझ जाती थी। पर माँ अब सब कुछ खत्म हो गया मैं आपके लिए शुभ कामना ही कर सकता हूँ। इसी के माध्यम से आपसे सम्बन्ध बना रहेगा।

आपका शुभ हो, भला हो, परलोकवासी आपकी सहायता करें।

सत्यदेव की जय।

आपका बेटा

चमन

मेरी प्यारी मां,

आप इस दुनिया को छोड़ चुकी हो, बहुत ही दु:ख है। मैनें हमेशा आपको अपनी मां माना है। 24 वर्ष पहले मैंने सबसे पहले आपको देखा था, आपकी सादगी को देखकर उसी दिन से मुझे आप में अपनी मां दिखाई देती थी। आपका सीधा सादा सरल रूप कोई छल कपट नहीं, इसी से प्रभावित होकर आपके बेटे को देखे बिना मैंने इस रिश्ते के लिए हां कर दी कि आपके बेटे भी आप जैसे अच्छे होंगे। मां, आपने और पिता जी ने मुझे बहू नही हमेशा बेटी माना है। आपके साथ दुख और सुख शेयर किया है। हमारे बीच कभी भी लड़ाई झगड़ा नहीं हुआ। यदि ग़ल्ती से भी मैंने कभी आपका दिल दुखाया हो, तो मुझे क्षमा कर देना। मेरे बच्चों को भी आपने बहुत प्यार दिया है। हम और बच्चे आपकी कमी बहुत महसूस करेंगे। आप परलोक में अच्छे लोगों के साथ रहना। अब तो आप अपने लोगों से मिल चुकी होंगी। हम सब यह प्रार्थना करते हैं कि आप खुश रहें और अच्छे लागों के साथ आप का वास हो।

आपकी बेटी (बहू)

निशा

कल्याण सत्संग

(18 अक्तूबर से 21 अक्तूबर तक)

इस सत्संग के लिए श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने और उनके अधीन बूटा सिंह जी ने मन्दिर की बहुत साफ-सफाई का काम और यात्रियों के ठहरने के लिए गद्दों, बिस्तरों, चारपाईयों आदि का प्रबन्ध और लंगर के लिए राशन-पानी और दूध का प्रबन्ध 2 दिन पहले बहुत भागदौड़ कर किया।

इस सत्संग में शामिल होने के लिए मल्लेकां, केसूपुर (सिरसा) से 5 जन, मेहर सिंह के साथ, गंगानगर पदमपुर से 5 जन वी. पी. सिंह के साथ एक और जन, गोनियाना से 3 जन चण्डीगढ़ से श्रीमान बलदेव सिंह जी के साथ 4 जन 18 तारीख की शाम तक पहुँच गये। सबके ठहरने, भोजन वगैरह करने का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया।

प्रवेश सभा :- यह सभा रात को 8.00 बजे की गई। इसके सभापति श्रीमान बल बहादुर सिंह जी थे। महिमा विषयक एक भजन जो जगदीष जी ने गाया, उसके बाद सभापति जी ने धर्म क्या है के बारे में बताया। पहले अच्छे इन्सान बनना जरूरी है। इस सत्संग की विशेषता बताते हुए सभापति जी ने बताया कि हम सब बहुत गल्तियाँ करते हैं मगर हमें अपनी गलती न सिर्फ नज़र नहीं आती बल्कि अगर कोई हितैषी बताए भी तो वो भी बहुत बुरा लगता है। फिर सत्संग में आकर किस तरह एक-एक भाई-बहन व एक-एक सन्तान, एक-एक पति-पत्नी और एक-एक अन्य जन को अपने दूसरों के प्रति व्यवहार की भयानक गल्तियाँ नज़र आयीं। इस विषय में बहुत सच्ची पुरानी व नयी प्रभावशाली घटनाएं बहुत सुन्दर ढंग से पेश की। एक-एक पिता के अपने बच्चों के प्रति सारी उम्र के दुर्व्यवहार को बताते हुए और बाबा आम्टे या भक्त पूर्ण सिंह जी के सुन्दर जीवनी बताई । प्रभावशाली और हृदयों पर बहुत अच्छा प्रभाव डालने वाला वातावरण बन गया और अगले दिन की सभा के बारे में बताकर 4 बार जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई।

19.10.2018, पहली सभा, सुबह 9.00 बजे :- इसके सभापति श्रीमान बलेदव सिंह जी थे। जगदीष जी ने गाए 2 भजनों के बाद सभापति जी ने बताया कि प्राय: सभी मनुष्य आत्माएँ अत्यन्त घोर अन्धकार में लिप्त हैं। अपनी और दूसरों की महा हानि कर रहे हैं उस अवस्था में उन्हें अपने बनने बिगड़ने की कोई सोझी नहीं हैं। समाज में आकर, नेचर की ये सच्चाई को दिमाग से जानकर कि मनुष्य पर वातावरण का बहुत जोरदार असर पड़ता है फिर भी प्राय: सारी उम्र इस सच्चाई के प्रति अन्धे रहते हैं। और ये सच्चाई हृदय ग्राही नहीं बनती। मनुष्य के नीच अनुराग सदा उसे अन्धेरे में डुबोए रखते हैं और उसे अपनी तृप्ति के लिए घसीटकर ले जाते हैं। फिर सभापति जी ने देव प्रभाव दायक संगत के विशेष व हितकर वातावरण की महिमा कितनी ही असरदायक घटनाओं द्वारा पेश की और हाजरीन को कभी किसी मूल्य पर उच्च संगत से उदासीन न होने की प्रेरणा की।

सभा में 25 जनों के करीब हाजरी थी और कुछ हृदय बहुत प्रभावित होते हुई दिखाई दे रहे थे। इससे आगे 3.00 बजे और 6.30 बजे सभा का प्रोग्राम रखा गया।

दूसरी सभा, दोपहर 3.00 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी :- दो भजनों के बाद सभापति जी ने बताया कि शिष्टाचार भी धर्म का या उच्च जीवन का आवश्यक अंग है। फिर शिष्टाचार नामी पुस्तक में से कितनी ही अति हितकर बातें बताई और समझायी और हाजरीन को जो 25 के करीब

जन थे इस पुस्तक को बार-बार पढ़ने की प्रार्थना की।

<u>तीसरी सभा, शाम 6.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :-</u> उन्होंने नीच घृणा या गुस्सा क्या होता है? इस सच्चाई की समझाने की कोशिश की और नीच घृणा की बहुत सी घटनाएँ ब्यान की। फरीद जी, ईसा मसीह और सिक्ख गुरू साहिबान की गुस्से से रहित बहुत उच्च घटनाएँ बताई। श्रद्धेय श्रीमान दवत्व सिंह जी जिन्होंने इस महा नीच भाव पर फतह पाई उनकी घटनाएँ सुनाई फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने गुरूमहाराज की अपार करूणा को महसूस करके अपनी नीच घृणा भरी भयानक अवस्था के बारे में बताया कि देव समाज में आने और भगवान का कारज करने में लगने के उपरान्त 30-32 साल तक अपनी नीच घृणा का भयंकर रूप बिल्कुल दिखाई नहीं दिया, फिर धीरे-धीरे पूजनीय भगवान की रोशनी मिलने पर इस कोढ़ का पता लगा उन्होंने अपने ही घर में और अपने उपकारियों, सेवकों और बाहर के जनों के सम्बन्ध में अपनी नीच घृणा की गतियों को दुख से भरकर बताया और कहा कि गुरु की कृपा से मेरा ये कोढ़ घट गया है।

<u>20-10-2018, पहली सभा, सुबह 9.00 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :-</u> सबसे पहले 2 भजनों का गान हुआ। सभापति जी ने विस्तार से बताया कि देव समाज के नियत आठों पाप छोड़ने और अन्धविश्वासों को अनुचित हानिकारक समझने पर गुरू महाराज का सेवक बनकर भी धर्म नहीं आता। पहले कुछ उच्च भाव पैदा होने की आवश्यकता है। मोटे-2 उच्च सात्विक भाव बताए। और फिर कहा कि इनके बगैर कोई अच्छा इन्सान नहीं बन सकता धर्म तो दूर की बात हैं। पशु रहकर हानिकारक बना रहता है। सबसे बड़ा पाप बताते हुए समझाया कि कसाई, बलात्कारी छोटी-2 बच्चियों को मारने और उनका माँस खाने वाले भी उतने बड़े पापी नहीं होते जितना कोई जन शुक्रगुजारी से खाली और नाशुक्रा और कृतध्न होता है। फिर शुक्रगुजारी के भाव की महिमा का वर्णन किया। कई जनों के अनगिनत उपकारों का वर्णन किया। सभापति जी ने समाज में आकर और चन्द साल रहकर भी अपनी उच्च भाव विहीन दयनीय अवस्था का वर्णन किया। फिर अपने कितने ही उपकारियों के उपकारों का गुणगान किया। दीनतापूर्वक उच्च लोकवासी सरदार साहब जमीयत सिंह जी के महान कृतज्ञ हृदय का ब्यान किया और उनके उपकृत सरदार साहेब फरिश्ता तहसीलदार सावन सिंह जी की प्रति उपकार की सुन्दर छवि का चित्रण किया। कई कृतघ्नों और कई महान कृतज्ञ भावधारियों की सुन्दर गाथा सुनाई । गुरू महाराज के महानतम उपकार को पेश करने के लिए श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की बाणी को दोहराया और बहुत व्याकुलता से 30 के करीब हाजरीन को उक्त उच्च भावों को पैदा करने के लिए सारा जोर लगाने और इस दर से जुड़ने और उच्च बरकतों को पाने की अपील की। इस सभा से पहले संगरूर से डा० नवजोत जी के साथ 4 जन व बच्चे आने थे। जो पहले पहुँच गये थे।

<u>दूसरी सभा, दोपहर 3.00 बजे, सभापति श्रीमान मेहर सिंह जी :-</u> इस सभा से पहले बठिण्डा से श्रीमान किशोरी लाल जी व चण्डीगढ़ के चमन लाल जी व उनकी धर्मपत्नी पहुँच गए थे।

सभापति जी ने हाजरीन से पूछा कि इन्सान दु:खी क्यों है? फिर बताया कि अपने नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं के कारण दु:खी और हर प्रकार से बर्बाद होता है। नीच अनुरागों से ही मिथ्या विश्व, पापाचार और सम्बन्धों में नर्क पैदा होता है। फिर सवाल किया गया कि इन्सान का सच्चा मित्र कौन होता है। इसके जवाब में उन्होंने बताया कि जो हमें हमारे अवगुण बताता है जबकि जो हमारी प्रशंसा, और चापलूसी करे वह हमार सच्चा मित्र होता है?

"सबसे बढ़कर वो सम्बन्धी, उच्च जीवन जो देवे दान सम्बन्धों का ब्यान करते हुए सास-बहु, नन्द-भावजा के बारे में अच्छी तरह बताया फिर बताया कि सम्बन्ध देने से बढ़ते हैं, मीठे बनते हैं लेने से और खाने से कड़वाहट और दूरियाँ पैदा होती हैं। धन के बारे में बताया कि धन सुख नहीं देता, हमें परेशान और दु:खी करता है। सच्चा सुख और खुशी उच्च भावों में है, कृतज्ञता में है। माता-पिता के सम्बन्ध में अपना पहला नीच जीवन बताते हुए बेबस होकर रोने लगे अपने माता-पिता को दु:खी करने, अपमान करने, कहना ना मानने की बातें रो-रोकर बताते रहे। फिर गुरू महाराज के चरणों में आकर माता-पिता का अर्चन करने और चरणों में सिर रखकर प्रणाम करने के सौभाग्य को महसूस करके बताते रहे (उनकी अवस्था बहुत अच्छी थी) जिसका हाजरीन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा रहा था। लड़का-लड़की पैदा होने के लिए किसी जाप-पाठ, पूजा करना बेवकूफी है, गाय भैंसों, पशु-पक्षियों को भी बिना पूजा-पाठ के बच्चे पैदा होते हैं। फिर बताया कि पत्नियाँ घर में बहुत सेवाकारी होती है, अत: हमें उनकी सेवा करनी चाहिए। कितने जनों पर इस सभा का अच्छा प्रभाव पड़ा।

<u>तीसरी सभा, समय शाम 6.30 बजे, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :-</u> बहुत सुन्दर भावों से 2 भजनों का गान हुआ। इसके बाद सभापति जी ने फरमाया कि धर्म के स्थानों व पूजा, पाठ व अन्य क्रियाकलापों की गिनती तो बढ़ रही है परन्तु सच्चा धर्म नहीं आ रहा। उन्होंने बताया कि हमारे जीवनों में धर्म के आने का सबूत ये होगा कि बुराईयां, नशे, चोरी, डकैती, बलात्कार, रिश्वतें कम होंगी, धीरे-धीरे खत्म होंगी व हर पक्ष में सुधार आएगा। इससे मनुष्य स्वयं के अस्तित्व का भी भला करेगा, अपने नजदीकी पारिवारिक सम्बन्धों में भी पवित्र एवं सहायकारी होगा व इससे आगे समाज का अंग होकर दूसरों के लिए भी सच्चा सहायकारी होगा। ऐसा समय आएगा ज्यूँ ज्यूँ कुछ धर्म भावों को समझने और इस पर चलने वाले लोग पैदा होंगे तब हमारे मिथ्या पूजा-पाठों व स्थानों की अहमीयत भी कम होगी। इसके बाद फरमाया कि हम सब कुछ अपने भावों के वश करते है, हमारी चलाकियाँ, हमारा तेज दिमाग भी नीच भावों के कारण हमारा भला नहीं कर सकता। देव धर्म किसी भी प्रकार के विश्वासों, जाप-पाठ आदि को धर्म नहीं समझता बल्कि हमारे अमलों, व्यवहारों के सही रूप को धर्म मानता है। देव धर्म जैसी उच्च संगत में आकर कल्याण गाँव के नम्बरदार सरदार सुच्चा सिंह जी, लाला जुली राम जी, श्रीमान नौध सिंह जी व अन्य कई जनों के जीवनों के उदाहरण पेश किये व उनके पहले के जीवनों व बाद में परिवर्तित जीवनों पर रोशनी डाली कि वह कैसे अपने व दूसरों के लिए हितकारी वजूद बन गये। सभापति जी ने अपने जीवन के दोनों पहलुओं के बारे में ब्यान किया कि कैसे वे धर्म की सच्ची संगत के बगैर अपने लिए व औरों के लिए विनाशकारी थे व बाद में माता-पिता, अपने भाई-बहनों व अन्य परिवार के लिए व कुछ दूसरों के लिए भी सेवाकारी-सहायकारी बन रहे हैं और कई जनों के परिवर्तन के बाद स्वयं के पति-पत्नी के सम्बन्ध में आए हितकर परिवर्तन को बताया व गुरू की विशेष संगत व उसके विशेष प्रभावों के आगे सजदा हो रहे थे। सभा का बहुत प्रभावशाली मण्डल बन रहा था।

<u>21-10-2018, सुबह 9.00 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिह जी :-</u> गुरू महाराज की छवि का अर्चन करने के बाद देव स्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। गुरू महिमा विषयक एक भजन का गान किया गया। सभापति जी ने फरमाया कि मनुष्य आँखे रखकर, बहुत तरह का विकास करके भी बेहिसाब अन्धकार में डूबा हुआ है। और कई विषयों के अलावा हमने एक दिन इस शरीर व जगत को छोड़ कर अवश्य जाना है अर्थात एक दिन मरना है, यह

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

कभी याद नहीं रहता। कई धर्मों की शिक्षाओं में सारे जगतों को स्वप्न बता दिया जो कि मिथ्या बात है परन्तु इस चलायमान शरीर में रहकर हमें मरने से पहले करना क्या है इस ओर ध्यान जाना चाहिए।

इस विषय को समझाने के लिए "बागे़ दुनिया का नजारा चन्द रोज" का गान किया गया। फिर सभापति जी ने कई जनों के उदाहरण देकर बताया कि हम किस तरह दुनियावी सामानों में डूबते जाते हैं। एक शरीफ जन उच्च संगत को इसलिए छोड़ गया क्योंकि वह अपने रिश्तेदार को शराब के नशे को देना नहीं छोड़ सका, एक बहुत बड़े सेठ साहब का दान न करने की बात करते हुए धन अनुराग की तड़पन में ही शरीर छूटा। बेटे-बहुएँ मरते हुए बुज़ुर्ग से अंगूठा/हस्ताक्षर लगवाने की होड़ तो रखते हैं परन्तु खुद भी शरीर छोड़ना है यह भूले रहते हैं। "अग्गा नेड़े आ गया पिच्छा रह गया दूर" यानि यह शरीर मरने की तरफ जा रहा है और परलोक का जीवन नज़दीक है यह स्मरण रखकर हमें जीना है जिन्होंने अपने जीवन को सफल किया उनके सुन्दर उदाहरण पेश किये। नेचर में भी वही वजूद बनते हैं जो दूसरों के लिए सेवाकारी होते हैं जो सिर्फ दूसरों का खून चूसने वाले, ध्वंसकारी होते हैं, उनका सफाया हो जाता है। जैसे जूएँ, सांप, शेर, डायनासोर आदि। इसके बाद बताया गया कि कैसे उच्च संगत से जुड़कर सरदार हरनाम सिंह जी ने, श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने सारी उम्र नीच स्वार्थ से ऊपर उठकर परोपकार में जीवन सफल किया, सुन्दर उदाहरण पेश किये गये। और दुनियाँ में भी उच्च गुणधारी जीवन हैं। उनके आगे सजदा करना है। और फ्लिप सिडनी की मरते वक्त भी अपना पानी दूसरे को पिलाने की हृदय स्पर्शी घटना बतायी। हमें सदैव उच्च वातावरण से जुड़े रहकर उच्च भावों को बढ़ाना है यही इस जीवन की सफलता है।

सभा के अन्त में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने आए हुए सभी धर्म सम्बन्धियों का व इस प्रोग्राम की प्रेरणा के लिए श्रीमान मेहर सिंह जी का हृदय गत भावों से धन्यवाद किया।

इस सारे प्रोग्राम की सफलता के लिए श्रीमान बलबहादुर सिंह जी व श्रीमान बूटा सिंह विशेष सेवाकारी हुए। भजनों का गान श्रीमान जगदीष जी व अन्य धर्म सम्बन्धियों ने भी किया। लँगर का प्रबन्ध अन्य कई सहायकारियों द्वारा बहुत अच्छा रहा। सभाओं में भी एक-एक बार हृदयों को छू लेने वाला वातावरण बनता रहा। सभा के अन्त में 10,500 रुपये लँगर के लिए दान प्राप्त हुआ व 1100 रुपये पत्रिकाओं का चन्दा प्राप्त हुआ।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts